POSTAL REG. NO. JAIPURCITY/410/2021-23 (RNI.REG.NO 39658/1983) #ग्रा.ग./2021/अंक 06-07 (संयुक्त)

मासिक प्रेषण दि. 8 जुलाई, सी.एस.ओ., आरएमएस गाँधी नगर, जयपुर-15

ग्राम गदर

वर्ष 1983 से प्रकाशित

माह : जून-जुलाई 2021 (प्रकाशन की तिथि : 01 जुलाई, 2021) मूल्य 50 पैसे

आपके नाम चिट्ठी

जयपुर से जोग लिखी प्रदीप महता का सबको राम-राम/सलाम! हमारी केंद्र सरकार हो या राज्य सरकारें, कोरोना की पहली लहर के बाद दावे तो बहुत किए लेकिन वे सभी महामारी से निपटने में खोखले साबित हुए। मसलन, अब हम कोरोना से लड़ने में पूरी तरह से सक्षम हैं, स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, हजारों करोड़ों रुपए का बजट, आत्मनिर्भरता का नाश, फार्मा उत्पादक देश होने का गर्व, सभी दिखावा बन कर रह गया। इस बार तो महामारी का असर गांवों तक में दिखा।

महामारी की इस लहर में कोरोना के इलाज से संबधित दवाओं और टीकों की कमी, ऑक्सीजन का अभाव, अस्पतालों व कोविड सेंटरों में पर्याप्त वेंटीलेटर का नहीं होना, स्वास्थ्य उपकरणों व दवाओं की कालाबाजारी जैसी कई समस्याएं भी सामने आई। बंगाल व बिहार के चुनावों में तो आमजन ही नहीं बल्कि राजनेता भी दो गज की दूरी, मास्क लगाना और भीड़ न जुटाने जैसे जरूरी कोरोना प्रोटोकाल को भुला बैठे और खुले मुंह भीड़ में भाषण देते नजर आए।

राष्ट्रीय आपदा की इस संकटकालीन घड़ी में भी राजनीतिक दल एक नहीं हो पाए व एक दूसरे पर दोषारोपण कर अपनी रोटियां सेंकते रहे। दरअसल, किसी ने भी यह कल्पना तक नहीं की कि दूसरी लहर के रूप में कोरोना इतना भीषण रूप लेगा। चर्चा तो यह भी है कि अब तीसरी लहर भी जल्द आने वाली है, जो इस बार बच्चों के लिए घातक हो सकती है।

ऐसा भी नहीं है, सभी लंबी नींद में सोते रहे हों, स्थिति सामने आते ही केंद्र और राज्य सरकारों के साथ आमजन सचेत हुए। महामारी से निपटने के लिए सेवाभावी लोगों के दल सामने आने लगे, जिन्होंने तन-मन और धन के साथ पीड़ितों को सहाश देने का प्रण लिया, जो कि एक सुखद संकेत है।

मुझे गर्व है कि हमारे देश की यह परम्परा रही है कि मुसीबत में सब एक साथ खड़े हो जाते हैं तथा उम्मीद है, अब हम आगे की सुध लेने में इस परम्परा को निभाते रहेंगे।

नौकरी छूटी तो शुरू की ऑर्गेनिक खेती

प्रदेश में कोरोनाकाल में कई लोग अपनी नौकरियां और अपनी कमाई का जरिया गंवा बैठे। लेकिन ऐसे हालात में भी उन्होंने हार नहीं मानी। कोरोना की दूसरी लहर में भी उन्होंने इसे एक चुनौती मान कर बड़े साहस के साथ मुकाबला किया।

ऐसे ही एक उदयपुर जिले की मावली तहसील के सांगवा गांव के युवा हैं प्रकाश डांगी, जिन्होंने गांव में बंजर पड़ी जमीन को फिर से उपजाऊ बनाया और उस पर ऑर्गेनिक खेती कर, अपनी कमाई का जरिया बनाया।

प्रकाश का कहना है कि उन्हें इस काम में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। आखिर उनके प्रयास काम आए और बंजर जमीन उपजाऊ हो गई। वे इसमें ऑर्गेनिक सब्जियों की खेती कर रहे हैं, जो उनके लिए काफी मुनाफे का सौदा बन गई है। वह अब इसे बड़े स्तर पर बढ़ाने की योजना बना रहे हैं।

अब देश में छाया बीकानेर मॉडल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशभर के जिला कलेक्टरों से वीडियो कॉफ्रेंसिग के दौरान बीकानेर कलेक्टर नमित मेहता की 'ऑक्सीजन मित्र योजना' को लेकर पीठ थपथपाई और इसे पूरे देश में लागू करने को कहा।

कलेक्टर मेहता ने ऑक्सीजन के अपव्यय को रोकने के लिए बीकानेर के पीबीएम अस्पताल में 'ऑक्सीजन मित्र योजना' शुरू की। जिसमें मरीजों के खाना खाते समय, शौचालय जाते समय ऑक्सीजन फ्लो बंद किया गया। इसके लिए उन्होंने अस्पताल में मॉनिटरिंग की व्यवस्था लागू की, जिसका उम्मीद से ज्यादा परिणाम सामने आया।

नीम हकीमों के चक्कर में फंसे ग्रामीण

उदयपुर-प्रतापगढ़ के गांवों में कई ग्रामीण नीम हकीमों के चक्कर में फंसे हुए हैं। वे खांसी बुखार को 'काली चढ़ी है' समझकर कोरोना का इलाज भोपा व झाड़-फूंक करने वालों से करा रहे हैं। उनका मानना है कि यदि वे डॉक्टर के पास गए तो वह उन्हें क्वारेंटाइन सेंटर में भेज देंगे, जहां उनकी मौत पक्की है।

कुछ लोग इसे भूत का प्रकोप भी मान बैठे हैं। इससे वे खुद की और अन्य ग्रामवासियों की जिन्दगी को भी खतरे में डाल रहे हैं। अब इन गांव वालों को कौन समझाए कि यह जानलेवा महामारी है और इसका इलाज न नीम हकीमों के पास है और न ही झाड़-फूंक करने वालों के पास है।

कोरोना से आजीविका पर भारी संकट

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा है कि कोरोना महामारी से लोगों की आजीविका पर बेहद विपरीत असर पड़ा है। ऐसे में प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में मनरेगा के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों को रोजगार से जोड़ा जाए।

उन्होंने कहा कि मानसून को देखते हुए मनरेगा के तहत पौधारोपण का कार्य बड़े स्तर पर कराया जा सकता है। इसे ध्यान में रखते हुए वन विभाग, मनरेगा और ग्रामीण विकास विभाग संयुक्त रूप से कार्ययोजना तैयार करें। ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग अपने संसाधनों से अपने-अपने क्षेत्रों में कोरोना को लेकर डोर-टू-डोर सर्वेक्षण जल्द पूरा करवाएं। श्रमिक मास्क लगाएं, बार-बार हाथ धोते रहें, दो गज की दूरी बनाए रखें और कोरोना प्रोटोकाल का पूर्ण रूप से पालन करें।

जागरूकता से नहीं फटका कोरोना

चित्तौड़गढ़ जिले के हरिपुरा पंचायत का बंबोरा गांव आसपास के गांवों में जागरूकता की मिसाल कायम कर रहा है। गांव में पिछले साल से लेकर अब तक एक भी व्यक्ति कोरोना महामारी की चपेट में नहीं आया है।

दरअसल, यहां के लोगों में अपने स्वास्थ्य के प्रति खास लगाव है। लोग योग, प्रणायाम और भारतीय पद्धति के अनुसार अपना जीवन यापन करते हैं। इस गांव के कंवर लाल धाकड़ लोगों को योग, प्रणायाम और भारतीय संस्कृति व परम्परा का जीवन जीने के साथ-साथ कोरोना संक्रमण से बचने के सभी उपायों की तालीम देकर लोगों को जागरूक बना रहे हैं।

नहीं जाने दूंगी लोगों को मौत के मुंह में

सीकर जिले के गांव झींगर छोटी की सरपंच सरोज देवी का मानना है कि कोरोना महामारी से बचने के लिए जागरूकता ही सबसे बड़ा हथियार है। गांव में कोरोना के मामले सामने आते ही उन्होंने अपने गांव में संपूर्ण लॉकडाउन लगा दिया।

उनका कहना है कि 'मैं लोगों को मौत के मुंह में नहीं जाने दूंगी'। वह गांव के लोगों को साथ लेकर रोजाना गांव में सैनेटाइज कराती हैं। लोगों को जागरूक कर मास्क पहनने, दो गज की दूरी बनाए रखने, बार-बार साबुन से हाथ धोने की कड़ाई से पालना करा रही हैं। इसी तरह धोद इलाके के किरडोली गांव में ग्रामीणों की ओर से भी गांव में लॉकडाउन की पहल की गई है। ग्रामीण उसकी बहुत अच्छी तरह से पालना कर रहे हैं। गांव में दवा वितरण के लिए भी टीम बनाई गई है।

धर्म से बड़ी है मानव सेवा

जयपुर जिले के बीलवा गांव में राधा स्वामी सत्संग ब्यास संस्था के करीब 500 सेवादार, 100 से भी ज्यादा डॉक्टर और बड़ी संख्या में नर्सें अपनी निःशुल्क सेवाएं देकर करोना मरीजों की सेवा में लगे हैं।

जिला कलेक्टर के प्रस्ताव पर राधा स्वामी सत्संग ब्यास ने यहां मात्र 8 दिन में 700 बेड का सभी सुविधाओं सहित अस्पताल बनाकर तैयार कर दिया। यहां डॉक्टर, नर्सें और सेवादार मरीजों के लिए संपूर्ण चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराने के साथ ही खाना, दवाई, फल आदि की भी पूरी व्यवस्था संभाल रहे हैं। गौरतलब यह है कि सत्संग ब्यास 'धर्म से बड़ी मानव सेवा' को महत्वपूर्ण मानते हुए यह सब अपने खुद के खर्चे पर कर रहा है।

तीसरी लहर हो सकती है मासूमों पर भारी

कोरोना की तीसरी लहर जल्दी ही आने की आशंका व्यक्त की जा रही है। इसमें बच्चों की जिंदगी जोखिम में हो सकती है। राजस्थान में बड़ी संख्या में बच्चे कुपोषण और खून की कमी (एनीमिया) के शिकार हैं। ऐसे बच्चों पर ज्यादा खतरा है। चिकित्सा विशेषज्ञों का मानना है कि प्रदेश में करीब 42 लाख से भी ज्यादा बच्चे इस श्रेणी में आते हैं।

उनका कहना है कि यह समय मासूमों को बचाने की तैयारी करने का समय है। इसमें सरकार, समाज और परिवार सभी को एकजुट होकर जुड़ना होगा। प्रदेश के ग्रामीण इलाकों में तो अभी भी कोरोना महामारी के इलाज की व्यवस्था तक नहीं है। इससे निपटने के लिए अभी से सारी व्यवस्थाओं को मजबूत बनाना होगा।

नहीं होनी चाहिए अर्थव्यवस्था कमजोर

कोरोना की पहली लहर में गांव औद्योगिक क्षेत्रों के लिए बड़ी उम्मीद बनकर उभरे थे। तब गांवों ने ही देश की अर्थव्यवस्था को संभाला था। इसमें कृषि और सेवा क्षेत्र ने अहम योगदान दर्ज कराया था। ग्रामीण क्षेत्रों में मांग बनी रहने से मजबूती बनी रही। लेकिन कोरोना की इस दूसरी लहर का घातक असर गांवों पर भी देखा जा रहा है।

कई राज्यों के ग्रामीण क्षेत्रों में भी कोरोना कहर बन कर टूटा है। किसान और मजदूर भारी संख्या में बीमार हुए हैं। कोरोना से गांवों में मौतें भी बढ़ी है। अर्थव्यवस्था को संभालने के लिए निवेश बढ़ाना आवश्यक होगा। स्वास्थ्य, शिक्षा और कृषि पर ज्यादा ध्यान देना होगा। अगर कृषि उत्पादन पर्याप्त मात्रा में नहीं हुआ तो किसानों के हाथ में पैसा कम पहुंचेगा। इससे ग्रामीण क्षेत्र से मांग में कमी आ सकती है।

बच्चे ने समझाई ऑक्सीजन की अहमियत

गुजरात के हीरानगरी में चार साल का दियांश दूधवाला अनोखे अंदाज में पर्यावरण के संरक्षण के लिए लोगों को जागरूक बना रहा है। वह एक कंटेनर में पौधा रखकर व उसे नली द्वारा मास्क और मुंह से जोड़कर बता रहा है कि पौधे किस प्रकार ऑक्सीजन प्रदान कर लोगों का जीवन बचाते हैं।

वह चौराहों पर मार्च कर कहता है 'धरती पर पेड़ पौधे बहुत जरूरी है' क्योंकि उनसे ऑक्सीजन मिलता है। अगर लोगों ने पेड़ पौधों का खयाल नहीं रखा तो वह दिन दूर नहीं जब बच्चों को कंधे पर स्कूल बैग की बजाय श्वास लेने के लिए ऑक्सीजन का डिवाइस (एक तरह का सिलेंडर) लेकर चलना पड़ेगा। जीत फाउंडेशन इंडिया संस्था के सहयोग से दियांश द्वारा कोरोनाकाल में दिया जा रहा यह संदेश एक नजीर पेश करने वाला है।

महिलाओं का छूट रहा रोजगार

कोरोना एवं लॉकडाउन का कामकाजी महिलाओं पर खासा असर पड़ा है। पिछले डेढ़ साल में बड़ी संख्या में महिलाएं नौकरियों से निकाली गई तथा कुछ ने घर की जिम्मेदारियों के कारण नौकरी छोड़ दी।

सेंटर फॉर मॉनीटरिंग इंडियन इकोनॉमी की ओर से जनवरी-अप्रेल 2021 की जारी ताजा सर्वे रिपोर्ट में यह उजागर किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार राज्य में महिलाओं की बेरोजगारी दर बढ़कर 69.22 प्रतिशत हो चुकी है जो कि पिछले साल मई-अगस्त 2020 में 39.84 प्रतिशत थी। इसमें दैनिक मजदूरी करने वाली व शिक्षा क्षेत्र में काम करने वाली महिलाएं सबसे ज्यादा प्रभावित हुई हैं। अब कोरोना की दूसरी लहर के कारण फिर संकट गहरा रहा है।

जरूरी है ग्रामीणों को जागरूक करना

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि कोरोना की दूसरी व तीसरी लहर गांवों तक नहीं फैलनी चाहिए। हर हालत में गांवों को कोरोना महामारी से मुक्त रखना है। इसके लिए गांवों में लम्बे समय तक जागरूकता लाने के प्रयास आवश्यक हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा व अन्य सुविधाओं का अभाव है। सभी राज्यों के ग्रामीण विकास व पंचायतीराज विभाग को इस पर खास नजर रखनी होगी।

दूसरी लहर के बीच बच्चों के लिए चिंता जाहिर करते हुए मोदी ने कहा कि इसके लिए हमें अधिक तैयारी करनी होगी। तीसरी लहर बच्चों के लिए ज्यादा खतरनाक होने का अंदेशा है। उन्होंने वैक्सीन की बरबादी पर चिंता जाहिर करते हुए कहा कि वैक्सीन की बरबादी का मतलब है, किसी के जीवन को सुरक्षा कवच नहीं दे पाना।

ग्रामीण युवाओं को मिलेगा रोजगार

कोरोना की दूसरी लहर में सरकारी अस्पतालों में कर्मियों की कमी महसूस की जा रही है। इसे देखते हुए केंद्र सरकार प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत सरकारी अस्पतालों, डेडिकेटेड़ कोरोना सेंटरों में युवाओं को महामारी से जुड़े 6 तरह के कार्यों का प्रशिक्षण देने की तैयारी कर रही है।

केंद्रीय कौशल विकास मंत्रालय ने इस बारे में राज्य सरकार को पत्र लिखकर कोर्स शुरू करने को कहा है। साथ ही जिला कलेक्टरों को कहा गया है कि जिला कौशल समिति की मदद से प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए और उन्हें रोजगार उपलब्ध कराया जाए।

प्रदेश में ब्लैक फंगस का इलाज मुफ्त

राज्य सरकार ने प्रदेश में ब्लैक फंगस के मरीजों का इलाज सरकारी और निजी अस्पतालों में निःशुल्क कर दिया है। चिरंजीवी योजना के तहत चयनित निजी अस्पताल भी इसका इलाज मुफ्त करेंगे।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने यह निर्देश देते हुए कहा बीमारी की रोकथाम एवं इलाज मे काम आने वाली दवाइयों व इंजेक्शन की व्यवस्था की जाएं ताकि इलाज में किसी प्रकार की देरी नहीं हो पाए। उन्होंने कहा कि कोरोना की तरह ही इस बीमारी को भी नोटिफाइड़ बीमारी में शामिल किया गया है। ज्ञातव्य है कि इस बीमारी से आंखों की रोशनी चली जाती है।

मेडिक्लेम के बावजूद भटक रहे मरीज

प्रदेश में कोरोना काल के दौरान कई जगह निजी अस्पतालों ने मनमानी की और बेड अनुपलब्ध बताकर मरीजों को भर्ती करने से इनकार कर दिया। जबकि किसी भी अस्पताल के शत-प्रतिशत बेड कोविड के लिए आरक्षित नहीं थे।

कई निजी अस्पतालों ने तो बेड खाली नहीं बताकर सामान्य मरीजों को भर्ती करने से ही इनकार कर दिया। ऐसे मरीजों की शिकायत सुनने और उनका त्वरित समाधान भी नहीं हो पाया।

सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक स्वत्वाधिकारी प्रदीप एस महता के लिए भालोटिया प्रिन्टर्स, जयपुर से प्रकाशित।

'अक्षत टावर', डी-217, भास्कर मार्ग, बनीपार्क, जयपुर 302016 फोनः 228 2821 से 23 फैक्सः 0141-228 2485

कम्पोजिंग एवं लेआउट राजकुमार त्रिवेदी, 'कट्टर', जयपुर